देवगुरु बृहस्पति की शिवाराधना

संसार की सृष्टि करने की इच्छा से ब्रह्मा ने मरीचि, अत्रि, अङ्गिरा आदि मानस-पुत्र उत्पन्न किये। उनमें अङ्गिरा के एक आङ्गिरस नामक पुत्र हुए। वे शैशवावस्था में ही बड़े बुद्धिमान् और विद्वान् थे। वे सब शास्त्रतत्त्व जाननेवाले, वेदों के पारंगत, बड़े रूपवान्, गुणवान्, एवं शील-सम्पन्न थे। उन्होंने भगवान् शंकर की आराधना प्रारम्भ की। परमपावनी काशी नगरी में शिवलिङ्ग की स्थापना कर वे घोर तपस्या करने लगे।

तपस्या करते हुए उनके जब दस हजार वर्ष बीत गये, तब जगदीश्वर महादेव उस लिङ्ग से प्रकट होकर कहने लगे कि 'मैं तुम्हारी तपस्या से परम प्रसन्न हूँ, अपना अभीष्ट वर माँगो।' अपने सामने उत्कृष्ट तेजोमय जटाजूटधारी, परमकल्याणकारी भगवान् शंकर की मूर्ति देखकर वे प्रसन्न-वदन से इस प्रकार स्तुति करने लगे-'चन्द्रमा के समान गौर कान्तिवाले, शान्तस्वरूप शङ्कर! आपकी जय हो। आप रुचि के अनुकूल मनोहर पदार्थों एवं चारों पुरुषार्थों को देनेवाले हैं। आप सर्वस्वरूप, सब कुछ देनेवाले तथा नित्य शुद्ध हैं। पवित्र भक्तों द्वारा शुद्ध भाव से दी हुई महती उपहार-सामग्री को ग्रहण करते हैं। भक्तजनों पर आयी हुई घोर सन्ताप-परम्परा का आप नाश करनेवाले हैं। आपने सबके हृदयाकाश को व्याप्त कर रक्खा है। प्रणत-जनों को आप मनोवाञ्छित वर देनेवाले हैं। शरणागत भक्तों के पापरूपी महान् वन को जलाने के लिये दावानलस्वरूप हैं। अपने शरीर से भाँति-भाँति की लीलाएँ करते रहते हैं। आपका श्रीअङ्ग परम सुन्दर है। आप कामदेव के बाणों को सुखा देनेवाले हैं। धैर्यनिधे! आपकी जय हो। आप मृत्यु आदि विकारों से सर्वथा रहित हैं तथा अपने चरणों में प्रणाम करनेवाले भक्तजनों को भी मृत्यु आदि विकारों से रहित कर देते हैं। पुण्यात्मा पुरुषों का मनोरथ पूर्ण करते और सर्पों को आभूषणरूप में धारण करते हैं। आपका वामाङ्ग भाग गिरिराजनन्दिनी उमा से व्याप्त है। आपने अपने सर्वव्यापी स्वरूप से सम्पूर्ण जगत् को व्याप्त कर रक्खा है। तीनों लोक आपके ही स्वरूप हैं, फिर भी आप इन सभी रूपों से परे हैं। आपकी दृष्टि बड़ी सुन्दर है। आप अपने नेत्रों के खोलने-मीचने से जगत् की सृष्टि और प्रलय करनेवाले हैं। आपने ही अग्निदेव को प्रकट किया है। जगत् को उत्पन्न करनेवाले भूतनाथ! एकमात्र आप ही प्रमथगणों के पालक और स्वामी हैं। अपनी शरण में आये हुए पतितजनों पर भी आप अपना वरद हस्त फैलाते रहते हैं। आप सम्पूर्ण भूतल में फैले हुए आवरण का निवारण करनेवाले तथा प्रणवनादरूपी सुधाधौलिगृह में निवास करनेवाले हैं। आपने चन्द्रमा को अपने ललाट में धारण कर रक्खा है। गिरिराजकुमारी पार्वती के द्वारा सर्वथा सन्तुष्ट रहनेवाले शिव! मैं आपको नमस्कार करता हूँ। शिव! देव! गिरीश! महेश! विभो! आप वैभव प्रदान करनेवाले और कैलास पर्वत पर सोनेवाले हैं। पार्वतीवल्लभ! आप सबको सुख देनेवाले हैं। चन्द्रधर! आप भक्ति का विघात करनेवाले दुष्टों को कठोर दण्ड देनेवाले हैं। तीनों लोकों को सुखी बनाइये। सबकी पीड़ा हरनेवाले महादेव! मैं काल से भी नहीं डरता। अमोघमते! आप शीघ्र मेरी पापराशि का

विनाश कीजिये। शिव के चरणारविन्दों में नमस्कार करने के सिवा दूसरी किसी विचारधारा को मैं जीवों के लिये कल्याणकारी नहीं मानता, अतः आपके चरणों में ही मस्तक झुकाता हूँ। इस सम्पूर्ण विशाल जगत् में भगवान् शिव को सन्तुष्ट करना ही सब पापों का नाशक तथा परम गुणकारी है। हे ईश! आप त्रिगुणमय प्रपञ्च से अतीत, नागराज वासुकि का महान् कंगन धारण करनेवाले तथा प्रलयकाल में सबका विनाश करनेवाले हैं, अतः मैं आपको नमस्कार करता हूँ।' (स्कंदपु. काशीखण्ड 17/34-41)

इस प्रकार महादेवजी की स्तुति करके बृहस्पति मौन हो गये। आङ्गिरस की ऐसी स्तुति सुनकर भगवान् आशुतोष ने और भी प्रसन्न होकर उन्हें अनेक वर दिये। उन्होंने कहा -'हे आङ्गिरस! तुमने बृहत्(बड़ा) तप किया है, इसलिये तुम इन्द्रादि देवों के पति तथा ग्रहों में पूज्य होओगे और तुम्हारा नाम 'बृहस्पति' होगा। तुम बड़े वक्ता और विद्वान् हो, इसलिये तुम्हारा नाम 'वाचस्पति' भी होगा। जो प्राणी तुम्हारे द्वारा स्थापित इस लिङ्ग की आराधना करेगा और तुम्हारे द्वारा की गयी स्तुति का पाठ करेगा उसे मनोवाञ्छित फल मिलेगा तथा ग्रहजन्य कोई बाधा भी उसे पीड़ित नहीं करेगी।'

इस प्रकार अनेक वर देकर भगवान् शंकर ने ब्रह्मा, इन्द्र आदि सभी देवताओं को बुलाया और ब्रह्माजी से कहा कि 'बृहस्पतिजी को सभी देवों का आचार्य बना दो।' ब्रह्माजी ने उसी समय बृहस्पति का देवाचार्य पद पर अभिषेक कर दिया। उस समय देवताओं की दुंदुभियाँ बजने लगीं। इस प्रकार भगवान् शंकर के अनुग्रह से आङ्गिरस ने वह पद पाया[1], जिससे बढ़कर स्वर्गलोक में कोई दूसरा पद हो ही नहीं सकता।

उनके द्वारा स्थापित बृहस्पतीश्वर के[2] पूजन से प्राणी प्रतिभासम्पन्न हो जाता है तथा उसे अभीष्ट-सिद्धि की प्राप्ति होती है और वह गुरुलोक में प्रतिष्ठित होता है।[3]

(उपर्युक्त कथा गीताप्रेस, गोरखपुर द्वारा प्रकाशित कल्याण के शिवोपासनांक एवं संक्षिप्त स्कंदपुराणांक पर आधारित है।)

❁❁❁❁❁❁

---

1. **ते ये शतं देवानामानन्दाः। स एक इन्द्रस्यानन्दः। ते ये शतमिन्द्रस्यानन्दाः। स एको बृहस्पतेरानन्दः।** (तैत्तिरीयोपनिषद्, ब्रह्मानन्दवल्ली 8/9-10)

अर्थात्-स्वभावसिद्ध देवों के आनंद की अपेक्षा इन्द्र का आनंद सौ गुणा होता है तथा इन्द्र के आनंद की अपेक्षा बृहस्पति का आनंद सौ गुणा होता है।

2. पावन पुरी काशी में बृहस्पतीश्वर संकटा घाट पर विराजमान हैं।

3. **गुरुपुष्यसमायोगे लिङ्गमेतत् समर्च्य च।**
यत् करिष्यंति मनुजास्तत् सिद्धिमधियास्यति।।
अस्य संदर्शनादेव प्रतिभा प्रतिलभ्यते।।
आराध्य धिषणेशं वै गुरुलोके महीयते।। (स्कन्दपुराण, काशीखण्ड, अ. 17/60-62)